साहित्योत्सव
Festival of Letters
28 जनवरी - 2 फ़रवरी 2019
भाषाएँ अनेक • देश एक

दैनिक समाचार बुलेटिन
गुरुवार, 31 जनवरी 2019

संवत्सर व्याख्यान

फ़ैज़ की शायरी का असर आज भी गहरा है : गोपीचंद नारंग

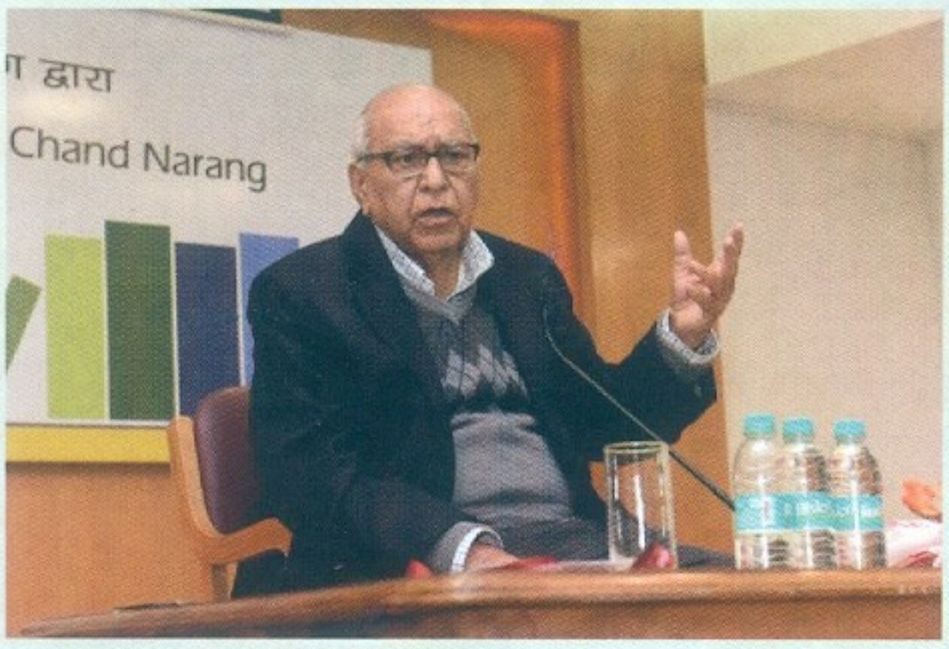

साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित साहित्योत्सव के तीसरे दिन 30 जनवरी 2019 को साहित्य अकादेमी की प्रतिष्ठित संवत्सर व्याख्यान माला के अंतर्गत प्रख्यात उर्दू आलोचक एवं अकादेमी के पूर्व अध्यक्ष गोपीचंद नारंग ने 'फ़ैज़ अहमद फ़ैज़ : तसव्वुरे इश्क़, मानी आफ़रीनी और जमालियाती एहसास' विषयक व्याख्यान दिया। आरंभ में अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने प्रोफ़ेसर नारंग का पुष्पगुच्छ से स्वागत किया। अपने स्वागत वक्तव्य में अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने संवत्सर व्याख्यान की गौरवमयी शृंखला से श्रोताओं का परिचय कराते हुए पूर्व वक्ताओं को याद किया।

प्रो. नारंग ने अपने व्याख्यान में कहा कि फ़ैज़ की शायरी में कुछ ऐसी नर्मी, दिल में उतरने की कशिश है, कुछ ऐसा मज़ा और कुछ ऐसा दर्द भरा है, जो उनके समकालीनों में नहीं है। यह हक़ीक़त है कि फ़ैज़ ने उर्दू शायरी में नए शब्दों को नहीं जोड़ा, लेकिन उन्होंने अभिव्यक्ति का ऐसा नया अंदाज़ अपनाया, जो उनकी इस कमी को पूरा करता है। उन्होंने शेर कहने की प्रतिष्ठित परंपरा का पूरा लाभ उठाते हुए उनकी ऊँचाई को छूआ। उनकी शब्दावली उस परंपरा की है, जो किसी को भी कालजयी बनाने के लिए काफ़ी है। फ़ैज़ की चिंता तो क्रांतिकारी है, लेकिन उनका अंदाजे बयां क्रांतिकारी नहीं। उनका दिल दर्दे मुहब्बत से चूर है। उनके शेरों में एक ऐसी आग है, जो मानो धीरे-धीरे सुलग रही है। उन्होंने अपने जमालियाती एहसास को क्रांतिकारी चिंता पर क़ुर्बान नहीं किया। फ़ैज़ की शायरी का असर लोगों के दिलों में आज भी गहरा है। उन्होंने अमीर खुसरो, ग़ालिब, फ़ैज़ की शायरी के उदाहरण देते हुए अपने विचारों को पुष्ट किया।

प्रेमचंद मानद महत्तर सदस्यता अर्पण समारोह

साहित्य अकादेमी द्वारा सार्क देशों के लेखकों को दिया जानेवाला प्रतिष्ठित प्रेमचंद मानद महत्तर सदस्यता सम्मान प्रख्यात श्रीलंकाई लेखक सांतन अय्यातुरै को अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार द्वारा प्रदान किया गया। इस अवसर पर सांतन अय्यातुरै ने कहा कि प्रेमचंद विश्व के महान यथार्थवादी साहित्यकारों में अन्यतम हैं और इसलिए उनके नाम पर स्थापित यह सम्मान प्राप्त करना मेरे लिए गौरव की बात है।

आज के कार्यक्रम

आमने-सामने
रवींद्र भवन परिसर, पूर्वाह्न 10.00

युवा साहिती : नई फ़सल
अखिल भारतीय युवा लेखक सम्मिलन
रवींद्र भवन परिसर, पूर्वाह्न 10.30 बजे

राष्ट्रीय संगोष्ठी : भारतीय साहित्य में गाँधी
साहित्य अकादेमी सभागार, अपराह्न 11.00

सांस्कृतिक कार्यक्रम
गायन-बायन, माटी अखरा एवं राम विजय खंड दृश्य
रवींद्र भवन परिसर, सायं 6.00 बजे

के. श्रीनिवासराव, आशा देवी, चंद्रशेखर कंबार, सांतन अय्यातुरै एवं माधव कौशिक

लेखक सम्मिलन

पुरस्कृत लेखकों ने साझा किए अपने लेखन के रचनात्मक अनुभव

वीणा ठाकुर

रहमान अब्बास

लोकनाथ उपाध्याय

इंदरजीत केसर

चित्रा मुद्गल

साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित साहित्योत्सव के तीसरे दिन 30 जनवरी 2019 को 'लेखक सम्मिलन' का आयोजन अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। कार्यक्रम में साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2018 से पुरस्कृत 21 भाषाओं के लेखकों ने पाठकों के साथ अपने लेखन के रचनात्मक अनुभवों को साझा किया। बाङ्ला, अंग्रेज़ी, ओड़िया और मलयाळम् के लेखक किन्हीं कारणों से कार्यक्रम में उपस्थित नहीं हो सके। कार्यक्रम के आरंभ में अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने औपचारिक स्वागत करते हुए लेखक सम्मिलन की विशिष्टता को उजागर किया।

डोगरी लेखक इंदरजीत केसर ने कहा कि मेरे हर उपन्यास में आतंकवाद से होनेवाले विनाश तथा अनुभवों का उल्लेख है, लेकिन सामान्यतया मेरे अधिकतर उपन्यास नारी प्रधान हैं, जिनमें नारी के मनोविज्ञान और मनोस्थिति के बारे में लिखा जाता है।

गुजराती लेखिका शरीफा विजलीवाला ने कहा कि मेरे पिताजी अखबार बेचते थे, इसलिए तरह-तरह की पत्रिकाएँ और किताबें आती थीं। वहीं से पढ़ने की आदत हुई। भारत विभाजन संबंधी साहित्य के नजदीक आने के बाद मैंने विभाजन से संबंधित सारा साहित्य पढ़ा और इनको पढ़कर ऐसा लगा कि इसके केंद्र में वह आम आदमी है जिसे हिंदुस्तान-पाकिस्तान, गुलामी-आजादी से कुछ लेना-देना नहीं था। फिर भी वही घर से बेघर हुआ, वतन से बेवतन हुआ और अपनी जड़ों से उखड गया। इसी आदमी की पीड़ा ने मुझे समझाया कि इतिहासकार जहाँ मूक रहा है, वहाँ लेखक मुखर हुआ है।

हिंदी के लिए पुरस्कृत चित्रा मुद्गल ने अपने वक्तव्य में कहा कि कुछ लेखकों की कुछ कृतियाँ उसके अपराध बोध की संतानें होती हैं। दरअसल ऐसी कृतियों के जन्म का स्रोत सृजनकार की अंतश्चेतना में अनायास, अनामंत्रित आसमाया, सदियों-सदियों से किया जा रहा वह अपराध होता है जो उसके वंशजों द्वारा किया गया होता है और उसी अपराध की विरासत को ढोता हुआ वह नहीं जानता कि समाज के कलंक को ढोने वाला, स्वयं के माथे पर उस कलंक को चिपकाए हुए जी रहा है।

मैथिली लेखिका वीणा ठाकुर ने कहा कि मेरा पुरस्कृत कहानी-संग्रह परिणीता समकालीन समाज, संस्कृति एवं मानवीय मूल्यों का ऐसा दस्तावेज है, जिसके अधिकांश पात्र मध्यम वर्गीय हैं तथा वर्तमान विषमताओं से उत्पन्न आक्रोश आर्थिक दुश्चिंता एवं सामाजिक नैतिकता से संबंधित समस्याओं के शिकार हैं।

राजस्थानी लेखक राजेश कुमार व्यास ने कहा कि कविता हमेशा एक नई दृष्टि देती है। यात्राएँ केवल भौगोलिक ही नहीं, बल्कि अंतर्मन की भी होती है। बचपन के संस्कारों से मुझे पद रचना को प्रेरित किया और आगे चलकर यही मेरी अभिव्यक्ति का साधन बने।

संस्कृत लेखक रमाकांत शुक्ल ने बताया कि उनकी पुरस्कृत काव्य कृति की पहली कविता उनकी माँ के बारे में तथा अन्य 25 कविताएँ सुनामी की भयंकरता के कारण भारत की विडंबनात्मक स्थिति आदि को प्रस्तुत करती हैं।

उर्दू लेखक रहमान अब्बास ने अपने अनुभवों को साझा करते हुए बताया कि उनका उपन्यास मानवीय भावनाओं, विशेषकर प्यार, लालसा एवं कामुकता जैसी विशिष्ट अभिव्यक्तियों के विविध पहलुओं को उजागर करता है।

अन्य पुरस्कृत लेखकों - सनन्त तांति, (असमिया), रितुराज बसुमतारी (बोडो), के.जी. नागराजप्प (कन्नड), मुश्ताक़ अहमद मुश्ताक़ (कश्मीरी), परेश नरेंद्र कामत (कोंकणी), बुधिचंद्र हैस्नांबा (मणिपुरी), मधुकर सुदाम पाटील (मराठी), लोकनाथ उपाध्याय चापागाईं (नेपाली), मोहनजीत सिंह (पंजाबी), श्याम बेसरा (संताली), खीमन यू. मूलाणी (सिंधी), एस. रामकृणन (तमिऴ) और कोलकलूरि इनाक् (तेलुगु) ने भी अपने रचनात्मक अनुभवों को साझा किया।

दर्शक दीर्घा

शरीफ़ा विजलीवाला एवं माधव कौशिक

पूर्वोत्तरी : उत्तर–पूर्व एवं उत्तर क्षेत्रीय लेखक सम्मिलन

साहित्य परिवर्तन का अहिंसक माध्यम है : विश्वनाथ प्रसाद तिवारी

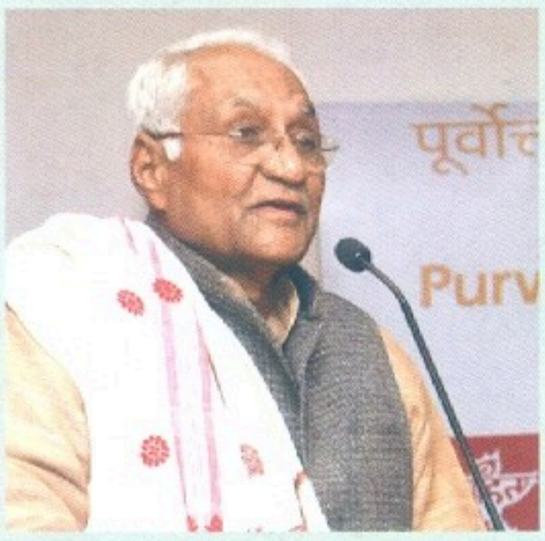

साहित्योत्सव के अंतर्गत 'पूर्वोत्तरी' कार्यक्रम के अंतर्गत उत्तर-पूर्व और उत्तर क्षेत्रीय लेखक सम्मिलन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए प्रख्यात हिंदी कवि-आलोचक एवं साहित्य अकादेमी के पूर्व अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि आज का समय व्यापक हिंसा का समय है और मेरा यह विश्वास है कि अगर साहित्य को जनता तक पहुँचा दिया जाए तो यह हिंसा निश्चित रूप से कम होगी। वास्तव में साहित्य परिवर्तन का अहिंसक माध्यम है। उन्होंने यह भी कहा कि दुनिया की कोई भाषा न किसी से बड़ी होती है, न किसी से छोटी। जिस परिवेश की भाषा होती है, उस परिवेश का सबसे उपयुक्त चित्रण वही भाषा कर सकती है और उसका हू-ब-हू अनुवाद होना संभव नहीं है। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि असमिया लेखक ध्रुव ज्योति बोरा ने कहा कि यह समय झूठी खबरों का है और सत्य एक सत्य नहीं रहा है। हर किसी का सत्य उसके लिए अलग-अलग है और इस कारण प्रेस और लेखकों आदि की स्वतंत्रता बाधित हुई है। लेखकों के सामने सबसे बड़ी चुनौती यही है कि वे एक सच्ची दुनिया को तैयार करे। कार्यक्रम की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने की और स्वागत भाषण साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने किया। दोनों ने ही भारतीय भाषाओं के साहित्य के संरक्षण और संवर्धन के लिए साहित्य अकादेमी की प्रतिबद्धता को रेखांकित किया।

सम्मिलन के अंतर्गत कहानी-पाठ के प्रथम सत्र की अध्यक्षता अंग्रेज़ी लेखिका मालाश्री लाल ने की। इस सत्र में गोविंद बसुमतारी (बोडो), शाइनी एंटनी (अंग्रेज़ी) और मनीषा कुलश्रेष्ठ (हिंदी) ने अपनी कहानियों का पाठ किया। बोडो कथाकार ने अपनी कहानी का पाठ अंग्रेज़ी अनुवाद में किया। 'मेरी रचना, मेरा संसार' विषयक परिचर्चा अंग्रेज़ी लेखिका सुकृता पाल कुमार के संयोजन में संपन्न हुआ, जिसमें अदाराम बसुमतारी (बोडो), कृष्णमोहन झा (हिंदी), संगीता मल्ल (अंग्रेज़ी) और राजेंद्र जोशी (राजस्थानी) ने अपनी रचना-प्रक्रिया, प्रेरणाओं और रचना संसार पर अपने विचार व्यक्त किए। तृतीय सत्र कविता-पाठ का था, जिसकी अध्यक्षता प्रतिष्ठित हिंदी कवि अरुण कमल ने की। इस सत्र में अर्चना पुजारी (असमिया), खोकन साहा (बाङ्ला), अरविंद उज़िर (बोडो), खजूर सिंह (डोगरी), नीतू (अंग्रेज़ी), वंदना यादव (हिंदी), फ़याज़ तिलगामी (कश्मीरी), जितेन नराह (मिसिंग), केनेबो राजकुमार (मणिपुरी), टी. बी. सुब्बा (नेपाली), मोहन त्यागी (पंजाबी), आलोक कुमार मिश्र (संस्कृत), रामपद किस्कू (संताली) एवं मोनिका सिंह (उर्दू) ने अपनी कविताओं के पाठ हिंदी-अंग्रेज़ी अनुवाद के साथ प्रस्तुत किए। सत्रों का संचालन अकादेमी की संपादक (अंग्रेज़ी) स्नेहा चौधुरी एवं क्षेत्रीय सचिव (मुंबई) कृष्णा किंबहुने ने किया।

साहित्योत्सव में भारत स्थित पाकिस्तानी दूतावास के महामहिम राजदूत श्री सुहैल महमूद भी पधारे

अनुवाद की चुनौतियाँ एवं समाधान विषयक परिचर्चा

युमा वासुकि, पूरनचंद टंडन, आलोक गुप्त, महेंद्र कुमार मिश्र, ओ.पी. झा, गौरीशंकर रैणा, मिनी कृष्णन, सुभाष नीरव, प्रकाश भातंब्रेकर एवं जानकी प्रसाद शर्मा

साहित्योत्सव के अंर्तगत 'भाषांतर : अनुवाद की चुनौतियाँ एवं समाधान' शीर्षक परिचर्चा का आयोजन किया गया, जिसमें विभिन्न भारतीय भाषाओं के अनुवादकों मिनी कृष्णन, आलोक गुप्त, पूरनचंद टंडन, गौरीशंकर रैणा, ओ.पी. झा, प्रकाश भातंब्रेकर, सुभाष नीरव, युमा वासुकि, जानकी प्रसाद शर्मा ने अपनी-अपनी भाषा की चुनौतियों और उनके समाधानों पर बातचीत की। परिचर्चा का संयोजन महेंद्र कुमार मिश्र द्वारा किया गया। अनुवादकों ने सांस्कृतिक, भौगोलिक, धार्मिक आदि विविधता के कारण आनेवाली अनुवाद संबंधी समस्याओं पर उदाहरण सहित व्यापक चर्चा की। उन्होंने अनुवादकों से दोयम दर्जे का व्यवहार, समुचित मानदेय न दिया जाना, प्रकाशकों का अभाव, समुचित समीक्षा न किया जाना आदि मुद्दे भी उठाए। अनुवादकों ने पद्यानुवाद की समस्याओं पर भी चर्चा की। अनुवाद की सकारात्मकता पर विचार करते हुए सबने एकमत से यह विचार प्रकट किया कि अनुवाद अपने आप में एक मौलिक पुनर्सृजन है।

उद्घाटन सत्र में औपचारिक स्वागत करते हुए अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने कहा कि भारत एक बहुभाषी समाज है और बहुसंख्य भाषाओं की उपस्थिति के नाते भारतीय परिवेश में अनुवाद की गतिविधियाँ व्यापक स्तर पर उपस्थित हैं। कार्यक्रम में बीजभाषण प्रस्तुत करते हुए प्रतिष्ठित विदुषी आशा देवी ने किसी भक्त कवि की यह उक्ति उद्धृत की : 'हे भगवान, मुझे तुम्हारे शब्दों को मौन में परिवर्तित करने और उसे हरेक व्यक्ति तक पहुँचाने की प्रतिभा और शक्ति प्रदान करो।' उन्होंने कहा कि अनुवाद कला की चुनौतियाँ बहुआयामी और बहुस्तरीय हैं। सत्र की अध्यक्षता अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार द्वारा की गई तथा समाहार वक्तव्य अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने दिया, जिन्होंने कहा कि चुनौतियों और समस्याओं के बावजूद यह तय है कि आनेवाला समय अनुवादकों का है। कार्यक्रम का संयोजन संपादक (हिंदी) अनुपम तिवारी द्वारा किया गया।

साहित्योत्सव के कार्यक्रम

1 फ़रवरी 2019

राष्ट्रीय संगोष्ठी : भारतीय साहित्य में गाँधी (जारी...)
पूर्वाह्न 10.00 - सायं 6.00 बजे, साहित्य अकादेमी सभागार

परिचर्चा : मीडिया और साहित्य
पूर्वाह्न 11.00 - अपराह्न 1.30 बजे, रवींद्र भवन परिसर

परिचर्चा : नाट्य लेखन का वर्तमान परिदृश्य
अपराह्न 2.30 - सायं 5.30 बजे, रवींद्र भवन परिसर

सांस्कृतिक कार्यक्रम : इंडो-फ़्यूज़न संगीत : सुनीता भुयाँ एवं समूह द्वारा
सायं 6.00 बजे, रवींद्र भवन परिसर

2 फ़रवरी 2019

राष्ट्रीय संगोष्ठी : भारतीय साहित्य में गाँधी (जारी...)
पूर्वाह्न 10.00 - सायं 6.00 बजे, साहित्य अकादेमी सभागार

आओ कहानी बुनें : बच्चों के लिए विविध कार्यक्रम
पूर्वाह्न 10.30 - अपराह्न 2.00 बजे, रवींद्र भवन परिसर

परिचर्चा : भारत में प्रकाशन की स्थिति
पूर्वाह्न 11.00 बजे - अपराह्न 1.30 बजे, रवींद्र भवन परिसर

ट्रांसजेंडर कवि सम्मिलन
अपराह्न 2.30 - सायं 5.00 बजे, रवींद्र भवन परिसर

साहित्य अकादेमी
रवींद्र भवन, 35, फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110001
ईमेल : secretary@sahitya-akademi.gov.in
दूरभाष : 011-23386626/27/28, फ़ैक्स : 011-23382428
वेबसाइट : http://www.sahitya-akademi.gov.in